Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | फरवरी 2020 (द्वितीय)

अमर बलिदानी, आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

आर्य समाज सिरसा के वार्षिक उत्सव में मुख्यातिथि सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य जी।

वैदिक साधना आश्रम कुण्ड मनेठी, रेवाड़ी के वार्षिक उत्सव में मुख्यातिथि सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य जी।

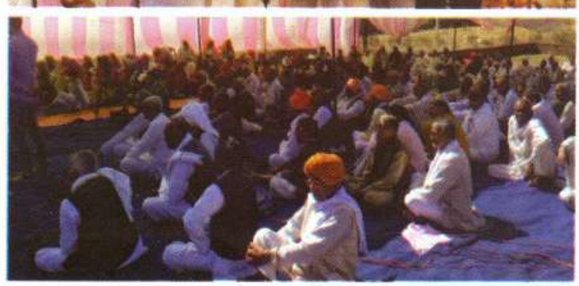

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 16 अंक 2

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

फरवरी, 2020 (द्वितीय)
16 से 29 फरवरी, 2020 तक

इस अंक में....

1. जिज्ञासा-विमर्श (सृष्टि विषय) 2
2. जहाँ ज्ञानी बुद्धिमान होते हैं, वहाँ स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है 3
3. वेदमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है 5
4. शिवरात्रि पर ऋषि को हुए बोध ने वेदोद्धार कर अविद्या को दूर किया 7
5. कोरोना—विनाशकारी जैव हथियार! 9
6. वैदिक संस्कृति—आर्यवर्त से इंडिया तक 10
7. अपार शक्ति 11
8. लेखराम का लहू पुकारे 13
दुनिया की हालत.... 14
9. शेष-भाग 15
10. समाचार-प्रभाग 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

जिज्ञासा-विमर्श (सृष्टि विषय)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

जिज्ञासा-5. सृष्टिकाल को जानने में विशेष अवसरों पर जो ऋत्विग् वरण होता है या होता आ रहा है, वह होना

चाहिये वा नहीं ? और उसे प्रमाण मानकर सृष्टिकाल को भी मानना चाहिए कि नहीं ?

संकल्प में ब्रह्मदिन के द्वितीय प्रहरार्ध, मन्वन्तर, कल्प, युग और मास, तिथि आदि का उच्चारण कराया जाता है और इस उच्चारण करवाने में जो वर्तमान होता है-उसे ही कहा जाता है अर्थात् चार प्रहर में ब्रह्मा के द्वितीय प्रहर के आधा, 14 मन्वन्तरों में वैवस्वत मन्वन्तर युगों में कलियुग इत्यादि....। साथ ही कुछ लोग संकल्प करते समय श्वेत वाराह कल्पे भी कहलाते हैं। यह मुझे आप से जानना था कि सृष्टि में कल्प कितने होते हैं ? और श्वेत वाराह कल्प क्या है ?

स्वामी दयानन्द जी ने तो संस्कारविधि में केवल इतना ही लिखा—

यजमानोक्ति ओमावसोः सदने सीद, ऋत्विगुक्तिः- ओं सीदामि, यजमानोक्ति-अहमद्योक्तकर्मकरणाय भवन्तं वृणे, ऋत्विगुक्तिः-ओं वृतोऽस्मि।

किन्तु बहुत लोग वैवस्वत मन्वन्तरे, कलि प्रथम चरणे, श्वेत वाराह कल्प-आर्यावर्तैकदेशे-तिथौ-मासे आदि यजमान से बुलवाते हैं। क्या संस्कारविधि में जितना लिखा है, उतना ही उच्चारण करवाना चाहिए या अन्य भी ? तब हमें जिज्ञासा होती है कि कल्प कितने होते हैं जो वर्तमान में श्वेत वाराह कल्प के नाम से चल रहे हैं ?

कृपया मेरी जिज्ञासा का समाधान करके अनुगृहीत करें।
—पं० विभुमित्र शास्त्री, 'विद्यामार्तण्ड', सरस्वती सदन, ग्रा० व पो० चोरसुआ, पावापुरी, जिला नालन्दा।

समाधान-पत्र के माध्यम से आपने संकल्प पाठ के विषय में कई प्रश्न किये हैं। उनका उत्तर क्रमशः संक्षेप से लिखते हैं—

प्रश्न-....ऋत्विग् वरण होता है या होता आ रहा है, वह होना चाहिए या नहीं ?

उत्तर-होना चाहिए, क्योंकि यह शास्त्रसम्मत है।

प्रश्न-उसे प्रमाण मानकर सृष्टिकाल को भी मानना चाहिए कि नहीं ?

उत्तर-संकल्प पाठ को प्रमाण मानकर सृष्टिकाल को मानना चाहिए, क्योंकि इसे महर्षि दयानन्द जी ने भी माना है और परम्परा से चला आ रहा है।

प्रश्न-संकल्प पाठ कराते समय **'श्वेत वाराह कल्पे'** भी कहवाते हैं। ....सृष्टि में कितने कल्प हैं ? श्वेत वाराह कल्प करवाना ठीक है कि नहीं ? श्वेत वाराह कल्प क्या है ?

उत्तर-सम्पूर्ण सृष्टि को ही कल्प कहते हैं, इसलिए सृष्टि में कितने कल्प होते हैं, यह कहना तो बनेगा नहीं। पौराणिकों ने 30 कल्पों के नामों की कल्पना कर रखी। यह कल्पना कैसे की है यह ज्ञात नहीं है। जैसे 30 दिनों का एक महीना है, उस महीने के दो पक्ष हैं और उसमें सात दिनों के नाम हैं, वे सात दिन बार-बार आते रहते हैं। उसी प्रकार पौराणिकों ने 30 कल्पों (सृष्टियों) का एक महीना माना है, उनके दो पक्ष माने हैं और 30 कल्पों के नाम भी पृथक्-पृथक् रखे हैं।

वे नाम हैं-1. श्वेत वाराह कल्प, 2. नील लोहित कल्प, 3. वामदेव कल्प, 4. रथन्तर कल्प, 5. रौरव कल्प, 6. प्राण कल्प, 7. बृहत् कल्प, 8. कन्दर्प कल्प, 9. सत्य कल्प, 10. ईशान कल्प, 11. व्यान कल्प, 12. सारस्वत कल्प, 13. उदान कल्प, 14. गारुड़ कल्प, 15. कौर्म कल्प (पूर्णिमा), 16. नारसिंह कल्प, 17. समान कल्प, 18. आग्नेय कल्प, 19. सोमकल्प, 20. मानव कल्प, 21. पुमान् कल्प, 22. वैकुण्ठ कल्प, 23. लक्ष्मी कल्प, 24. सावित्री कल्प, 25. घोर कल्प, 26. वराह कल्प, 27. वैराज कल्प, 28. गौरी कल्प, 29. माहेश्वर कल्प, 30. पितृकल्प (अमावस्या)। श्वेत वाराह कल्प कराना ठीक प्रतीत नहीं होता। पौराणिकों के अनुसार श्वेत वाराह कल्प एक सृष्टि का नाम है।

स्वामी दयानन्द जी ने जो संस्कारविधि में **'आवसोः सदने सीद'** आदि लिखा है, उसको करते हुए संकल्प पाठ करना उचित है, उसको करना चाहिए। इस विषय में कल्प विषयक जानकारी मान्य आचार्य आनन्द प्रकाश जी गुरुकुल अलियाबाद से प्राप्त हुई। इसके लिए आचार्यश्री का धन्यवाद। कल्प के लिए वाचस्पत्यम् शब्दकोष भी देखें।

क्रमशः अगले अंक में...

जहाँ ज्ञानी बुद्धिमान् होते हैं, वहाँ स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक, Mob. 9911197073

गतांक से आगे....

जब तक कर्मों का अभिमान बना है, तब तक ब्रह्मज्ञान या मुक्ति नहीं हो सकती है। जब मुक्ति होती है तो कोई कर्म शेष नहीं रहता। जैसे प्रेम का स्थूल-रूप

'शरीर' है, सूक्ष्म रूप 'मन' है और सूक्ष्मातिसूक्ष्म-मूलस्वरूप 'आत्मा' है। प्रेम का प्रारम्भ 'तन' से प्रारम्भ होता है, मध्य में 'मन' और अन्त में 'आत्मा'। जब प्रेम तन पर टिक जाता है तो यह वासना, मोह-मूढ़ता का रूप ले लेता है। वही प्रेम जब मन तक पहुँच जाता है तो वासना छूटने लगती है, पर भीतर सूक्ष्म वासना विद्यमान रहती है, अहंकार बना रहता है और वही प्रेम जब आत्मतल पर पहुँच जाता है, तो उपासना बन जाती है, भक्ति हो जाती है, परन्तु भक्ति को साधारण मूढ़जन मूर्तियों के गढ़ने में ही मान लेते हैं। हम इन मूर्तियों को ही परमात्मा मान लेते हैं। मूर्तियां हमें निर्मित नहीं करती हैं। जगत् ही उसकी प्रतिमा है। इसे ही उसका बाह्य स्वयप जानो। जगत् के सभी चर-अचर प्राणियों से प्रेम करो-वही उसके प्रति भक्ति का प्रथम व अनिवार्य चरण है। परमात्मा 'सविता' है। यह जगत् उसकी ही कृति-रचना है। हमारा तन इस संसार से बाहर नहीं है और जो कुछ भी धन-सम्पदा है, सब उसी की है। यह जानते हुए जो जीता है वही ज्ञानी भक्त है। उसकी प्रज्ञा प्रकृष्ट-गुण, कर्म व स्वभाव को धारण कर पाती है।

इसलिए प्रत्येक सन्त, ज्ञानी, महापुरुष, मनीषी, विद्वान् जब भी संसार को कुछ देने की बात करता है या देता है तो मात्र बुद्धि, विवेक, प्रज्ञा। यह ज्ञान वेदों से प्राप्त होता है। इसे ही ब्रह्मज्ञान, परमदान, महादान कहा है। मनुस्मृति में कहा है—'**सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते**' सब दानों में 'ब्रह्मदान' ही सबसे अधिक विशिष्ट है, महान् है, क्योंकि सब दुःखों के मूल में अज्ञान, अविद्या ही है और सब सुखों के मूल में विवेक ज्ञान है। विवेक होने पर सब विपदायें, बाधायें स्वतः ही दूर हो जाती हैं, तभी तो योगदर्शन में कहा है—'**तस्य सम्यक् दर्शनमेव अभावहेतुः**' सम्यक्-दर्शन, विवेक ही अज्ञान के अभाव का कारण है, जैसे सूर्य के उदय होने पर अन्धकार मिट जाता है वैसे ही विवेक के उदय होने पर विपदायें विदा हो जाती हैं।

यह 'गायत्री मन्त्र' जप स्मरण का मंत्र है, पर स्मरण का अर्थ शब्दों को बार-बार दोहराना नहीं है। जप, स्मरण के साथ समझ, प्रज्ञा, विवेक भी चाहिए। बिना सुमति के सुमिरन सम्भव नहीं है। बिना सुमति के हम जो कुछ भी करेंगे उससे हमारी मूढ़ता और अधिक होगी। हम अपनी प्रार्थनाओं में सम्पत्ति-समृद्धि की तो कामना करते हैं, परन्तु सम्पत्ति का जो मूल आधार है, उस सुमति, प्रज्ञा, मेधा की प्रार्थना नहीं करते हैं। जिस दैवी सम्पदा से हम परमात्मा को पाने के अधिकारी होते हैं, वही सम्पदा ही वास्तविक सम्पदा है। गायत्री मन्त्र में जिसे 'धी' कहा है। तुलसी उसे 'सुमति' कह देते हैं। भगवद्गीता में उसे 'पवित्र ज्ञान' कहा है। सांख्यशास्त्र में महर्षि कपिल ने इसे 'तत्त्व-ज्ञान' कहा है। भगवान् व्यास इसे 'यथार्थज्ञान' कहते हैं। महर्षि पतञ्जलि इसे 'विवेकख्याति', आदि शंकराचार्य इसे 'विवेक' और महर्षि दयानन्द जी इसे 'सत्यार्थप्रकाश' कहते हैं। इस गायत्री मन्त्र को गुरुमन्त्र, महामन्त्र, सविता मन्त्र, वेदमाता आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है।

इस जगत् में सभी की कामना है-वित्त की, धन की। हमें लगता है जीवन में 'वित्त' नहीं है तो जीवन व्यर्थ है। धन नहीं तो समझो 'निर्धन' ही हो गया। ऐसे लोगों ने 'धन' को ही जीवन में महत्त्व दिया-धन बटोरो, सम्पत्ति एकत्रित करो। धन होगा तो निर्धनता मिट जाएगी, समाज में मान होगा, परन्तु मृत्यु के क्षणों में पता चलता है-नहीं, यह वह धन नहीं है, वह धन तो सत्य है, ज्ञान है। मृत्यु के समय ही पता चलता है कि आत्मारूपी धन चला गया इसीलिए मृत्यु आ गई और इस धन की हमने कभी चिंता नहीं की, इसकी कभी खोज नहीं की। सारा

जीवन धूल-मिट्टी एकत्रित करते रहे-जो यहीं सब छूट रहा है। मृत्यु के क्षण में दोहराते हैं 'राम नाम सत्य है' सारा जीवन इस सत्य को जाना नहीं, अब मृत्यु के क्षण में बोध होता है, पर अवसर चूक गये।

केनोपनिषद् (2/5) में कहा है—'**इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति नो चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।**' (इह) इस जन्म या संसार में (चेत्) यदि (अवेदीत्) आत्मा को जान लिया (अथ) उस दशा में (सत्यम्) जीवन सफल (अस्ति) है। (चेत्) यदि (इह) इस जन्म में (न, अवेदीत्) आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया तो (महती विनष्टिः) बड़ी हानि या विनाश हुआ।

अर्थात् यदि मनुष्य अपने वर्तमान जीवन में अपने लक्ष्य की ओर ठीक-ठीक प्रवृत्त हो गयातो उसने अपने जन्म के लक्ष्य को पा लिया। यदि प्राणी इस मनुष्य तन में जो कर्त्तव्य और भोक्तव्य दोनों के साथ सम्बन्ध रखता है, ईश्वर को जान ले तो मुक्ति प्राप्त हो सकती है। यदि इस शरीर को केवल भोग-भावना में ही लगाये रखा और परमात्मा को जानने के स्थान में दिन-रात केवल शरीर की पुष्टि का यत्न ही करता रहा तो उस अवस्था में महान् विनाश होता है, क्योंकि नर-तन के छूटते ही स्वतन्त्रता अर्थात् कर्त्तव्य की शक्ति समाप्त हो जाती है। फिर अनेक जन्मों तक भोग योनियों अर्थात् ज्ञानशून्य देहों में धक्के खाने पड़ते हैं तब कहीं मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। अतः विवेकीजन प्रत्येक जड़-चेतन पदार्थ में कर्मफल प्रदाता तथा गति प्रदाता परमात्मा को विवेक-दृष्टि से देखते हैं और कर्म करने में स्वतन्त्रता का प्रयोग करते हैं, तब इस शरीर को छोड़कर मुक्ति प्राप्त करते हैं। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य अभी से धर्म-विचार में रत रहकर परमात्मा को जानने का यत्न करता है, वही सफल होता है। इसके विपरीत जो मनुष्य जीवन को केवल संसारी कार्यों में लगाये रखता है वह अपनी महती हानि कर रहा है।

एक बहुत ही सुन्दर दृष्टान्त हमारी इस बात को स्पष्ट करता है। एक व्यक्ति मृत्यु के अत्यधिक निकट था। परमेश्वर ने उससे पूछा, ''तुम चाहो तो स्वर्ग में भी जा सकते हो और नरक में भी।'' उस व्यक्ति ने पूछा, ''प्रभु! मैं समझा नहीं।'' भगवान् ने कहा, ''तुम स्वर्ग में जाना चाहो या नरक में, परन्तु इतनी शर्त है कि दो मूर्खों के साथ स्वर्ग जाना पसन्द करोगे या दो बुद्धिमानों के साथ नरक में।'' उस व्यक्ति ने कहा, ''प्रभो! मुझे दो बुद्धिमानों के साथ नरक में भेज दीजिए।'' भगवान् ने कहा, ''तुमने स्वर्ग क्यों नहीं चुना?'' उस व्यक्ति ने कहा, ''प्रभो! जहाँ ज्ञानी बुद्धिमान् होते हैं, वहीं स्वर्ग होता है और जहाँ मूढ़-मूर्ख होते हैं, वहाँ नरक होता है। मूढ़ मूर्ख का संग दुष्ट का संग है, कुसंग है।'' कहने का तात्पर्य यह है कि संतों, ज्ञानियों, धार्मिक बुद्धिमानों का संग ही परमात्मा की भक्ति का पहला मार्ग है।

(यह स्मरण रहे कि स्वर्ग और नरक किसी स्थान का नाम नहीं है, यह तो केवल एक दृष्टान्त है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वर्ग को सुख-विशेष और नरक को दु:ख-विशेष कहा है। दृष्टान्त तो केवल समझाने के लिए ही दिए जाते हैं, इसका अन्यथा अर्थ नहीं लिया जाना चाहिये)।

अर्थात् जो प्रभु के भक्तों का, ज्ञानीजनों, बुद्धिमानों का संग पा लेता है वही परमात्मा को पाने का मार्ग पा लेता है। इसीलिए स्वर्ग की चिन्ता मत करो, सुमति, सुबुद्धि की चिन्ता करो। तभी तो गायत्री मन्त्र में कहा है—'धियो यो नः प्रचोदयात्' दुर्जन, दुष्ट और कोई नहीं बल्कि दुरित-दुर्गुण-दुर्व्यसन से भरा मन ही दुर्जन है। एक शब्द है-सुमन जिसका मन 'सु' अर्थात् सत्य, शिव, सौन्दर्य से भरा हुआ है, तभी तो बारम्बार प्रार्थना की जाती है-'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' (यजु० 34/1) मेरा मन शिवसंकल्पों वाला हो। 'मन' सत्य, शिव व सौन्दर्य से भरपूर हो, यही प्रार्थना है। मन यदि हताश-निराश 'दुः' है तो सारे संसार में कुरूपता ही दिखाई देती है और यदि 'सु' है, प्रसन्नता है तो पतझड़ में भी अपूर्व सौन्दर्य दीख पड़ता है। अतः 'सुः' मन, ज्ञानी, बुद्धिमान् जनों का संग करना चाहिये, वहीं पर स्वर्ग है और परमात्मा से सदैव अच्छी बुद्धि की न केवल प्रार्थना करनी चाहिए बल्कि उस प्रार्थना को पुरुषार्थ द्वारा अपने जीवन में अपनाकर जीवन को सार्थक करना चाहिये।

संपर्क-4/45, शिवाजीनगर, गुरुग्राम (हरयाणा)

वेदमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

❑ डॉ० रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम', गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद मो० 8700640736

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों, व्याकरण एवं दर्शनों के अद्वितीय विद्वान् थे। स्वामी दयानन्द के बचपन का नाम मूलशंकर था। यही बालक बाद में स्वामी दयानन्द के नाम से सम्पूर्ण संसार में विख्यात हुए। स्वामी दयानन्द ने स्वामी विरजानन्द के पास रहकर पूरी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वेदों की रक्षार्थ संसार के लोगों से कहा था कि 'वेदों की ओर लौटो' और बताया कि वेदमार्ग एक ऐसा मार्ग है, जिस पर चलने से मानव जाति का कल्याण हो जाता है। सृष्टि के आदिकाल में परमात्मा ने चार ऋषियों के अन्त:करण में चार वेदों का ज्ञान दिया। ऋग्वेद का ज्ञान अग्नि ऋषि, यजुर्वेद का ज्ञान वायु ऋषि, सामवेद का ज्ञान आदित्य ऋषि और अथर्ववेद का ज्ञान अङ्गिरा ऋषि को दिया। इन चार ऋषियों ने विश्व के समस्त मानव जाति को बताया कि वेदवाणी परमात्मा की वाणी है। जो मनुष्य परमेश्वर की वाणी को अपने जीवन में उतारता है और तदनुकूल आचरण करता है उसका कल्याण हो जाता है। वेदों का कथन है कि जो मनुष्य जैसा कर्म करता है, परमात्मा उसे वैसा ही फल देता है। '**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' अर्थात् शुभ और अशुभ कर्मों को अवश्य ही भोगना पड़ता है। इसलिये मनुष्य अपने जीवन में सदा शुभ कर्म करें।

मनुष्य का जीवन अत्यन्त शुद्ध और पवित्र है। जो मनुष्य अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र बनाना चाहता है, उसे वेदमार्ग का अनुसरण करना ही पड़ेगा। वेदों का मन्तव्य है कि '**आचारहीनं न पुनन्ति वेदा:**' अर्थात् आचारहीन व्यक्तियों को वेद भी पवित्र नहीं करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन कर्म पर आधारित है। जो मानव वेदों के विरुद्ध आचरण करते हैं उनका जीवन पशुवत् हो जाता है। वह समाज की नजरों में पतित हो जाता है। समाज का निर्माण चरित्रवान् व्यक्तियों पर ही निर्भर करता है।

एक चरित्रवान् व्यक्ति के द्वारा ही समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण हो सकता है। मानव जीवन सबसे अमूल्य पदार्थ हैं। चरित्र के पतन होने से मानव समाज के बीच अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रहता है। वह समाज की दृष्टि में गिर जाता है और समाज के लोग उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। जो समाज राष्ट्र व विश्व का कल्याण चाहता है, अपना कल्याण चाहता है एवं अपना सुधार चाहता है तो उसे पहले स्वयं सुधरना पड़ेगा। उसे चरित्रवान् बनना पड़ेगा तभी वह समाज का निर्माण कर सकता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती चरित्र के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने उज्ज्वल चरित्र के द्वारा समाज को भी उज्ज्वल बनाने का प्रचास किया। स्वामी दयानन्द ने बताया कि '**न तस्य प्रतिमा अस्ति**' अर्थात् वेदों में ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं होती है। ऐसा लिखा है। यह यथार्थ है। परमात्मा का स्वरूप साकार नहीं निराकार है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के द्वितीय नियम में लिखा है—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

परमात्मा सत् चित् और आनन्द है प्रकृति सत् है। जीवात्मा सत् और चित् है। प्रकृति और जीवात्मा के पास आनन्द नहीं है। आनन्द तो केवल परमेश्वर के पास ही है। इसलिए हमारे देश के ऋषि-मुनि जंगलों में बैठकर प्रभु का ध्यान लगाते थे और परमात्मा को पाकर मोक्ष प्राप्त करते थे। प्रभु का कोई आकार नहीं है। वह निराकार है। सर्वत्र व्यापक है। न्यायकारी और दयालु है। अत: हमें ऐसे परोपकारी ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए अन्य की नहीं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके संसार के लोगों का बहुत बड़ा उपकार किया है। ऐसे परोपकारी दयानन्द को मेरा शत-शत नमन है। स्वामी दयानन्द ने संसार के लोगों को वेदों के मार्गों पर लाने का अथक प्रयास किया और कहा वेद परमात्मा का एक संविधान है जिसके नियमों के पालन करने से विश्व के सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है। '**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**' अर्थात् वेद ही सम्पूर्ण विश्व के धर्म का मूल है। वेद अमृतवाणी है। जो मनुष्य वेदरूपी अमृतवाणी का रसपान

करता है उसका जीवन पुनीत हो जाता है। जो मनुष्य वेदरूपी अमृतवाणी का रसास्वादन नहीं करता है उसका जीवन नरकवत् हो जाता है। स्वामी दयानन्द का प्रिय मंत्र था, जिस मंत्र से महर्षि ने यजुर्वेद का भाष्य किया है—

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव॥

हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर! आप सम्पूर्ण संसार के उत्पत्तिकर्त्ता हैं। प्रत्येक प्राणी आपसे ही प्रेरणा प्राप्त करता है। हम आपसे विनती करते हैं कि हे प्रभो, आप हमारे अन्त:करण के समस्त दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों को दूर कर दीजिये। आपकी कृपा एवं आशीर्वाद से हम सम्पूर्ण सद्गुणों को धारण कर अपने जीवन को महान् बनायें।

यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि मनुष्य का अन्त:करण शुद्ध और पवित्र होना चाहिये। एक प्रभु का भक्त इससे प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर! आप हमारे अन्त:करण की सारी बुराइयों और दुर्व्यसनों को दूर कर दीजिये और जो कल्याणकारी बातें हैं, उन्हें प्राप्त कराइये।

मानव का जीवन शुद्ध और पवित्र है, लेकिन कुछ मनुष्य अपनी बुरी आदतों से मजबूर हैं। वे स्वयं अपनी बुरी आदतों से अपने जीवन को बर्बाद कर डालते हैं और अपने को नरकरूपी गर्त में ढकेल देते हैं। यदि मनुष्य चाह लें तो आसमान को छू सकते हैं, हिमालय की चोटियों पर चढ़ सकते हैं, कठिन से कठिन कार्य को सरलता से पूर्ण कर सकते हैं, परन्तु आज मनुष्य बहुत आलसी हो गये हैं। ये काम करना नहीं चाहते हैं। आज के मनुष्य यही सोचते हैं कि बिना मेहनत के हमें रोटी मिल जाये तो यह संभव नहीं है। परमात्मा ने मनुष्य का जीवन शुभकर्मों एवं मोक्ष प्राप्त करने के लिए दिया है। महाकवि तुलसीदास ने बड़ा ही सुन्दर लिखा है—

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा॥
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जोइ परलोक संभारा॥

मनुष्य का जीवन अनेक जन्म-जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों के पश्चात् मिलता है। जो समझदार व्यक्ति होता है वह अपने जीवन को शुभकार्यों में लगाता है और जो समझदार नहीं होता है वह मनुष्य दारू, शराब, ताड़ी एवं बीयर पीता है, सिगरेट और बीड़ी पीता है, हुक्का पीता है, मांस खाता है, मछली खाता है, जबकि शास्त्रों का कथन है कि मांस मनुष्य का भोजन नहीं है। शास्त्रों का कथन है कि 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनो। परन्तु वर्तमान समय में कुछ मनुष्य मनुष्य रूप में राक्षस दीखते हैं।

परमेश्वर ने हमें मनुष्य का जीवन क्यों दिया है? परमात्मा ने हमें मानव जीवन मोक्ष प्राप्ति के लिए दिया है। परन्तु आज के मानव खाने, पीने, सोने और मौज उड़ाने में मस्त हैं। ऐसे लोग अपने जीवन को बर्बाद करते हैं। मैं मानता हूँ कि खाना, पीना और सोना मनुष्य के लिए जरूरी है। इतने काम तो पशु भी करते हैं तो मनुष्य और पशु में अन्तर क्या है? मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। ये अच्छाई क्या है और बुराई क्या है, दोनों को अच्छी प्रकार जानते हैं, लेकिन यह ज्ञान पशु को नहीं है।

क्रमशः अगले अंक में......

शोक-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक की कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या के पति श्री ओमप्रकाश आर्य का दिनांक 23.02.2020 को 60 वर्ष की आयु में फोर्टिस हास्पीटल शालीमारबाग नई दिल्ली में हृदयगति रुकने से देहान्त हो गया। इनके जाने से आर्य परिवार को भारी क्षति हुई है। आर्य परिवार सदैव आर्यसमाज के कार्यों में भाग लेता रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

नंदकिशोर जी का देहावसान

आर्यसमाज के इतिहास संकलन के पुरोधा, अनेक लघुग्रंथों के प्रणेता, नेपाल देश में गुरुकुल की स्थापना व संचालन, उत्साही, कर्मठ, सर्वप्रिय, निरालस, प्रेरक, सहयोगी नारद व आर्यसमाज के हनुमान के नाम से प्रसिद्ध आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी, जो मॉडल टाउन, पानीपत में रहते थे, उनका निधन दिनांक 17.02.2020 को हो गया। वे अपने श्रेष्ठ कार्यों से सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। सश्रद्ध नमन महान् विभूति को।

—सभामन्त्री

शिवरात्रि पर ऋषि को हुए बोध ने वेदोद्धार कर अविद्या को दूर किया

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने देश-विदेश को एक नियम दिया है **'अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये'**। इस नियम को संसार के सभी वैज्ञानिक एवं सभी विद्वान्

मानते हैं। आर्यसमाज में सभी विद्वान् अनुभव करते हैं कि देश में प्रचलित सभी मत-मतान्तर इस नियम का पालन करते हुए दिखाई नहीं देते। इसी कारण से ऋषि दयानन्द को मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं, सिद्धान्तों व परम्पराओं सहित सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों एवं आडम्बरों की समीक्षा करने सहित उनका खण्डन करना पड़ा। ऋषि के इन कार्यों का उद्देश्य विश्व के सभी मनुष्यों व भावी सन्ततियों का कल्याण करना था। ऋषि दयानन्द जी को इस कार्य की प्रेरणा अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से सन् 1863 में गुरु-दक्षिणा के अवसर पर उनसे विदा लेते समय मिली थी। इस कार्य को उन्होंने वेदप्रचार का नाम दिया। वेदप्रचार का अर्थ सत्य, न्याय तथा विद्यायुक्त मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार करना है। ऋषि दयानन्द के समय में संसार के लोग वेद व उसके महत्त्व को भूल चुके थे। ऋषि ने अपने गुरु के सान्निध्य में वेदों का महत्त्व जाना था और वेदों को प्राप्त कर उनकी परीक्षा करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और इसकी सभी बातें सत्य व स्वतः प्रमाण कोटि की है। वेद ही मनुष्य जाति का सर्वविध व सर्वांगीण कल्याण करने वाला दिव्य व अलौकिक ज्ञान भी है। सूर्य के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, वह अपना प्रमाण स्वयं उदय होकर अपने प्रकाश व उष्णता से देता है। जिसको सूर्य का प्रमाण चाहिये उसकी आंख व त्वचा इन्द्रिय ठीक होनी चाहिये जिससे वह वस्तुओं को देख सकता व उनका अनुभव कर सकता हो। मनुष्य अपनी आंखों से सूर्य को देखकर उसका प्रत्यक्ष अनुभव व ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

इसी प्रकार वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान होने एवं संसार के नियम व व्यवस्थायें वेदों के अनुरूप होने से यह सत्य व यथार्थ ज्ञान सिद्ध होता है। वेदों में ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। वेद अपनी इस महत्ता के कारण स्वतः प्रमाण है। वेदों से इतर अन्य ऋषियों, विद्वानों तथा आचार्यों द्वारा कही बातें वेद के अनुकूल होने पर ही प्रामाणित व स्वीकार करने योग्य होती हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदज्ञान की परीक्षा कर ज्ञान के सत्यासत्य होने की कसौटी **'वेद स्वतः प्रमाण एवं अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण'** को प्रस्तुत कर मनुष्य जाति पर महान उपकार किया है। यह उनकी एक महत्त्वपूर्ण देन है जिससे समस्त मनुष्य जाति सृष्टि के अन्तिम समय तक ईश्वर, जीवात्मा, सामाजिक परम्पराओं एवं सभी विषयों के ज्ञान सहित ईश्वर की उपासना आदि का सत्य ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होती रहेगी। आश्चर्य एवं दुःख की बात है कि अज्ञान व किन्हीं अन्य कारणों से विश्व ने वेदों के महत्त्व व इनकी उपादेयता को उनके यथार्थ स्वरूप में अब तक स्वीकार नहीं किया है। हम विचार करते हैं तो हमें ईश्वर व उसका ज्ञान वेद मनुष्य जाति का सर्वस्व एवं प्राणों के समान महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं जिससे मनुष्य जीवन सुगमता से व्यतीत करते हुए परजन्म में भी उन्नति को प्राप्त किया जा सकता है। सम्पूर्ण मनुष्य जाति का कर्तव्य है कि वह वेदों की रक्षा करे और वेदाध्ययन कर अपने जीवन को उसके अनुकूल बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने में भी सफल होंवे।

ऋषि दयानन्द का जन्म गुजरात राज्य के मौरवी जिले के टंकारा नाम ग्राम में फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी, वि. सम्वत् 1881 (12-2-1825) को एक औदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आयु के चौदहवें वर्ष में उन्होंने शिवरात्रि का व्रत किया था। पिता के साथ रात्रि जागरण करते हुए उन्होंने चूहों को शिवलिंग पर बिना किसी रोकटोक क्रीड़ा करते देखा था। इससे उन्हें बोध हुआ था कि वह मूर्ति सर्वशक्तिमान सच्चे शिव की मूर्ति नहीं है क्योंकि इसमें चूहों को अपने ऊपर से हटाने की शक्ति भी नहीं थी। बालक मूलशंकर (भावी ऋषि दयानन्द) के पिता व अन्य विद्वतजन भी उनकी शंका का समाधान नहीं कर सके थे। इस घटना के बाद से मूलशंकर ने मूर्तिपूजा करना छोड़ दिया था। कालान्तर में उनकी बहिन व चाचा की मृत्यु हुई। इस घटना ने उनके मन में मृत्यु का भय उत्पन्न किया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी मृत्यु का अनुमान कर डरे होंगे। मृत्यु की ओषधि है या नहीं, इसका समाधान उन्हें अपने परिवारजनों व आचार्यों से नहीं मिला। अतः सच्चे ईश्वर व उसकी प्राप्ति के उपायों सहित मृत्यु पर विजय प्राप्ति के साधनों की खोज में वह अपनी आयु के बाईसवें वर्ष में घर छोड़कर चले गये। उन्होंने देश के प्रायः

सभी प्रमुख तीर्थ स्थानों में जाकर वहां विद्वान संन्यासियों व महात्माओं का सान्निध्य प्राप्त किया और उनसे अपनी शंकाओं के समाधान जानने का प्रयत्न किया। उन्हें किसी से भी अपने प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। ऐसा करते हुए उन्होंने योग के आचार्यों से योग विद्या सीखी और उसमें निपुण हो गये। देश की दुर्दशा से वह चिन्तित रहते थे। उनकी यह पीड़ा उनके ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि में भी प्रकट होती है।

योग में समाधि अवस्था को प्राप्त कर लेने पर भी ऋषि दयानन्द अपनी ज्ञान की पिपासा को सन्तुष्ट नहीं कर पाये। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी की संगति से उन्हें उनके शिष्य मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती का परिचय मिला था जो वेद व आर्ष-ज्ञान के आचार्य थे। दण्डीजी मथुरा में अपनी पाठशाला में विद्यार्थियों को वेदांग व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य पढ़ाते थे। स्वामी दयानन्द सन् 1860 में उनके पास पहुंचे और लगभग 3 वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहकर वेद-वेदांगों का अध्ययन किया। तीन वर्षों में यह अध्ययन पूरा हुआ। सन् 1863 में गुरुदक्षिणा के अवसर पर गुरु विरजानन्द ने उनसे संसार से अविद्या वा अज्ञान दूर कर सत्य आर्ष ज्ञान को प्रचारित कर अनार्ष ज्ञान को हटाने की प्रेरणा की। ऋषि दयानन्द ने अपने गुरु की इस प्रेरणा को स्वीकार कर उसे शिरोधार्य किया था और आजीवन इसका पालन किया। इसके बाद से ही उन्होंने धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया था। उन्होंने अपने प्रयत्नों से वेदों की खोजकर उन्हें प्राप्त किया, उनका गहन अध्ययन एवं परीक्षा की और उसके बाद अपने वेद विषयक सिद्धान्तों का निश्चय कर वह देश भर में सत्य वेदज्ञान के प्रचार के कार्य में संलग्न हो गये। वेद प्रचार ही वह कार्य है जिससे देश देशान्तर में अविद्या को दूर किया जा सकता है। ऋषि दयानन्द को वेदप्रचार का कार्य करते हुए सफलता मिलनी आरम्भ हो गई थी। इसका एक उदाहरण 16 नवम्बर, सन् 1869 को विद्या की नगरी काशी में उनका लगभग 30 सनातनी विद्वानों से मूर्तिपूजा की वेदमूलकता पर शास्त्रार्थ हुआ जिसमें उन्हें सफलता मिली। इससे उन्हें पूरे विश्व में यश प्राप्त हुआ था।

ऋषि दयानन्द का जन्म ऋषियों की भूमि भारत में हुआ था। उनका कर्तव्य था कि वह प्रथम भारत में विद्यमान अविद्या, अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं सामाजिक विषमताओं को दूर करें। उन्होंने इस कार्य को अपनी पूरी योग्यता व क्षमता से किया। इसका अनुकूल प्रभाव हुआ जो आज भी दृष्टिगोचर हो रहा है। भारत की पराधीनता समाप्त हुई। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों व धर्मप्रचार एवं शास्त्रार्थ आदि नीतियों को न मानने का परिणाम ही देश का विभाजन था। ईश्वर, जीवात्मा और संसार का सत्यस्वरूप आज हमारे सामने है। हम ईश्वर की उपासना विधि सहित वायु एवं जल आदि की शुद्धि सहित मनुष्य को रोगों से दूर रखने तथा रोगी को स्वस्थ करने का उपाय अग्निहोत्र यज्ञ को भी जानते व करते हैं। हम यह भी जान पाये हैं कि हमारे रोगों का कारण हमारी अनियमित दिनचर्या सहित अनयिमित भोजन एवं वायु, जल एवं पर्यावरण की अशुद्धि व प्रदूषण होता है। शिक्षा व विद्या का महत्त्व भी देशवासियों ने समझा और आज भारत विद्या के क्षेत्र में विश्व के अग्रणीय देशों में हैं। ऋषि दयानन्द ने शुद्ध भूमि में परम्परागत देशी खाद व उत्तम नस्ल के बीजों से उत्पन्न खाद्यान्न को मनुष्य के लिए हितकर व स्वास्थ्यवर्धक बताया था। वर्तमान में इस बात की भी पुष्टि हो रही है। ऋषि दयानन्द ने स्वास्थ्य का आधार ब्रह्मचर्य को बताया था यह भी अब सभी स्वीकार करने लगे हैं। ब्रह्मचर्य का सेवन छूट जाने को ही उन्होंने देश व समाज के पतन का प्रमुख कारण भी बताया था। इसे भी विद्वानों ने ज्ञान के स्तर पर सत्य सिद्ध किया है। ऋषि दयानन्द ने मांसाहार, अण्डा, मछली, मदिरा को निन्दित भोजन बताया था। आज हमारे चिकित्सक हृदय व मधुमेह आदि अनेक रोगों में इन पदार्थों का सेवन न करने की सलाह देते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी इन पदार्थों का सेवन अत्यन्त निन्दनीय होने सहित आयु ह्रास का कारण है। इससे परजन्म में भी अतीव हानि होती है।

ऋषि दयानन्द ने महाभारत युद्ध के बाद मध्यकाल में सनातन वैदिक धर्म में प्रविष्ट मूर्तिपूजा व जड़पूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, सामाजिक असमानता व भेदभाव आदि का भी खण्डन व विरोध किया था। उन्होंने अपने ग्रन्थों में इनके सम्बन्ध में विस्तार से प्रकाश डाला है। आज तक किसी मत-मतान्तर का विद्वान व आचार्य ऋषि दयानन्द द्वारा खण्डित इन मान्यताओं व विचारों को वेदानुकूल अथवा मनुष्य जाति के लिए हितकर व लाभप्रद सिद्ध नहीं कर सका। ऋषि दयानन्द ने सत्य के प्रचार के लिये सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया। उन्होंने वेदों का अध्ययन करने के लिये संस्कृत के अनेक व्याकरण ग्रन्थों की रचना भी की। अपने समय में ऋषि

शेष पृष्ठ 14 पर....

कोरोना—विनाशकारी जैव हथियार!

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

जैविक हथियार जो मानवता व मानव के विनाश का सोचा-समझा नया षड्यन्त्र है, परमाणु हथियारों से भी आगे की विनाशलीला मनुष्य ने तैयार कर ली है। आज ऐसे हथियार बनाए जा रहे हैं, जिनसे कहीं भी मानव की एक बड़ी संख्या को भयंकर बीमारी फैलाकर नष्ट किया जा सकता है। कोरोना वायरस ऐसी ही एक मानव निर्मित जैविक हथियार की उपलब्धि है।

अभी सर्वत्र कोरोना वायरस से हुई सरस्त्रों व्यक्तियों की मृत्यु पर अनेक मीडिया प्रकाश डाल रहे हैं। पहले भ्रम फैला कि यह सर्प, बिच्छू, चमगादड़ से अथवा उनका मांस खाने से फैला, जिसको रोकने का उपाय अभी तक नहीं मिला था। बताया गया कि एक दूसरे से (छूत रोग) तथा जलवायु आदि से भी यह फैल रहा है। रोगियों व चिकित्सक स्टाफ कर्मचारियों को अन्यों से अलग ही रखा जा रहा है, क्योंकि एक दूसरे के सम्पर्क में आने से यह रोग दूसरे को हो सकता है।

कोरोना वायरस मानव निर्मित बताया जा रहा है। अर्थात् इसे चीन के बुहान शहर में एक प्रयोगशाला में बनाया गया है। जहाँ वैज्ञानिकों द्वारा जैविक हथियार बनाने का कार्य चल रहा है। जैविक पदार्थ कनाडा से मंगवाये जाते हैं। यह सब कार्य राष्ट्रपति जिनपिंग की देखरेख में ही चल रहा है। बुहान इंटीट्यूट ऑफ वायरोलोजी में ऐसे वायरस व बैक्टीरिया बनाकर शत्रु देशों पर किसी भी प्रकार छोड़कर वहाँ संक्रमण फैलाकर एक बड़े क्षेत्र में आबादी को नष्ट किया जा सकता है।

चीन में ऐसे कोरोना वायरस से पीड़ितों से अस्पताल भरते जा रहे हैं। यह जैविक हथियार के रूप में प्रयोग किया जाने वाला वायरस चीन ने बनाया तो था, शत्रु देशों के लिए परन्तु वैज्ञानिक से लीक हो गया तथा वहाँ के क्षेत्र में ही संक्रमण फैला दिया पहले तो सर्प-बिच्छू आदि बताकर भ्रम फैलाया गया परन्तु विदेशों के खुफिया विभाग की वैज्ञानिक शाखाओं द्वारा जानकारी दी गई कि कोरोना वायरस मेनमेड है और बुहान की लैब में तैयार किया जा रहा था जिससे युद्ध के समय इसका प्रहार शत्रु पर किया जा सके और स्वयं चीन इसका एण्टी डोट भी तैयार कर रहा था जिससे अपने देश चीन को बचाया जा सके। चीन में जिनेटिक इंजीनियरिंग पर बहुत कार्य चल रहा है तथा सख्त देशदेख के बावजूद इसकी जानकारी वहां से बाहर जाना कठिन कार्य था परन्तु इस कार्य का स्वयं ही उसकी जमीन पर ही भण्डाफोड़ हो गया।

बुहान शहर की स्थिति अब वीरान-सी हो गई है। नगर के मार्गों पर यातायात बन्द हो गया, कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता। मीडिया जगत् द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर पता चलता है कि लैब में कार्यरत व संक्रमित रोगियों के अस्पतालों में कार्यरत नर्स डॉक्टर तथा मैडिकल स्टाफ पैरामैडिकल स्टाफ का अपने परिवार व बच्चों से मिलना भी मना है और इसके बचाव में चिकित्सक वैज्ञानिक दिन-रात लगे हुए हैं, परन्तु संक्रमित रोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसकी स्थिति वहाँ भयावह बनी हुई है।

बड़े-बड़े देश मात्र भौतिक विकास पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। आध्यात्मिक विकास का अर्थ ही सबके लिए सुख व शान्ति की कामना है। अर्थात् **'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'** अर्थात् सभी सुखी रहें कोई दुःखी न हो। पूरा विश्व एक परिवार की भांति रहे **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना होनी चाहिए। **'खुद जियो औरों को भी जीने दो'** की भावना मन में होनी चाहिए। जैसा कि वेद की भावना है। ऐसी भावना अर्थात् आत्मिक विकास की भावना जहाँ न हो वहाँ भौतिक विकास मानव के लिए दुःखदायी हो जाता है और ऐसा भौतिक विकास मानवता का संहारक बन दुनिया के लिए अभिशाप बन जाता है। दूसरों के लिए गड्ढे खोदने वाला खुद ही गड्ढे में गिर जाता है। कर्म वह करना चाहिए जिसमें मानवता की भलाई हो, संसार का सुख हो। वेद में सबके सुख की भावना व सन्देश है। आज हम वेद को समझें व उसका कुछ अंशों में भी आचरण करें तो दुनिया सुखी हो जाएगी। आइये वेद की ओर चलें।

क्रमशः पृष्ठ 15 पर......

वैदिक संस्कृति—आर्यावर्त से इंडिया तक

❑ राहुल आर्य, गांव व डाक० नयाबांस (रोहतक) फोन नं० 8571050423

इकबाल ने जब खुद को कुरान शरीयत और हदिश की चासनी में नहीं डुबोया था तब एक शेर गाया था—

यूनान रोम मिश्र मिट गए जहाँ से,
मगर अब तक है बाकी नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा॥

हमारी संस्कृति पर आक्रमणों की सूची बहुत लम्बी है। आरम्भ रावण से कर लेते हैं। माना जाता है कि वैदिक संस्कृति पर प्रथम प्रहार विश्रवा के पुत्र रावण का था। लंका रावण की राजधानी थी। लंका से आर्यावर्त पहुँचने का एक समुद्री मार्ग था जो लकड़ियों और पत्थरों से जीर्ण था। उसी के माध्यम से रावण की आसुरी प्रजा का आवागमन दक्षिण में होता गया और रावण की म्लेच्छ संस्कृति दक्षिण में पल्लवित होकर वैदिक संस्कृति को दूषित करने लगी।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के धनुष से दुषितीकरण इस प्रवाह को थामा गया किन्तु मांस भक्षण, मदिरापान जैसी विसंगतियां तब तक अपना स्थान बना चुकी थीं।

उसके पश्चात् महाभारत में अर्जुन का विवाह नागलोक अनार्य पाताल लोक (अमेरिका) की कन्या उलोपी से हुआ। अर्जुन के पिता पाण्डव का विवाह मद्रदेश में हुआ। इन दोनों स्थानों की संस्कृति का विलय भी वैदिक संस्कृति में हो गया। धृतराष्ट्र के विवाह स्थान गान्धार का उदाहरण भी इसी श्रृंखला में समाहित है।

उस समय संस्कृति का अधिक ह्रास इसलिए भी नहीं हो पाया क्योंकि उस समय संस्कृति के रक्षक शक्तिशाली थे। जैसे-जैसे संस्कृति के रक्षक शक्तिहीन होने प्रारम्भ हुए संस्कृति का ह्रास भी दोगुनी गति पकड़ने लगा।

जब यूनानी सैल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य से युद्ध के मैदान में शक्ति का वेग मापा तो पराजित सन्धि के रूप में अपनी पुत्री हेलना चन्द्रगुप्त की पत्नी के रूप में सौंपकर यूनानी संस्कृति का एक जत्था और वैदिक संस्कृति में झोंक दिया।

यूनानियों के पश्चात् शकों का हमला संस्कृति पर हुआ। शकों के पश्चात् हूण आए। पहलब आए और साथ में अपनी-अपनी संस्कृति भी लेकर आए और आर्य संस्कृति में समाहित कर दी।

अब बारी उस आक्रमण की थी जिसने वैदिक संस्कृति को रक्त रंजित कर तार-तार कर दिया। अरबी आक्रमण का लुटेरा काफिला मुहम्मदिन कासिम के नेतृत्व में 712 ई० में सिंध के मार्ग में आया। वैदिक परम्परा को पददलित कर इस्लामी विधारधारा के यहाँ बीज बो दिए गए। जनेऊ को उतरवाने के लिए इस कातिल ने

गर्दन काटना ही अच्छा समझा। यह अरबी लुटेरा यहाँ से 17 हजार मण सोना, 6 हजार मण चांदी की मूर्तियां और 20 ऊँटों पर हीरे-पन्ने-माणिक लूटकर ले गया। मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदों का निर्माण कर कासिम आर्यावर्त क़े स्थान पर हिन्दुस्तान की नींव रख गया।

बगदाद का राजा हज्जाक और दमिश्क का इस्लामी खलीफा कासिम की तलवार से टपकते वैदिक संस्कृति के रक्त से बहुत प्रसन्न हुए। आर्यावर्त के वासियों को काफिर पुकारा जाने लगा और काफिरों को हिन्दू की संज्ञा दी गई और जहाँ हिन्दू रहते हों उस स्थान को हिन्दुस्थान अरबों द्वारा पुकारा जाने लगा।

उसके पश्चात् तुर्क आक्रमण ने अपना जोर दिखाया। महमूद गजनी ने इस देश पर 1009 ई० से 1027 ई० तक 17 बार आक्रमण किया।

आर्य संस्कृति को इस्लामी संस्कृति में बदलने का हरसंभव प्रयास तब तक किया जाता रहा जब तक वैदिक संस्कृति को ईसाइयत ने सत्यानाश करने के लिए न चुन लिया।

गजनी के पश्चात् मोहम्मद गौरी ने अपनी ताकत दिखाई। आर्य संस्कृति फिर लहूलुहान हुई। फिर आर्य संस्कृति को समाप्त करने का ठेका बलवन, खिलजी, तुगलक, लोदी, बाबर के वंशों ने ले लिया।

15वीं शताब्दी में पुर्तगालियों का जहाज भारत में आकर रुका। पुर्तगालियों ने अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के

शेष पृष्ठ 15 पर....

अपार शक्ति

❑ यश वर्मा, मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, यमुनानगर 9416446305

ऋग्वेद का एक मन्त्र है—

महीरस्य प्रणीतय: पूर्वीरुत प्रशस्यत:।
नास्य क्षीयन्त ऊतय: ॥

इस मन्त्र का अर्थ है कि इस ईश्वर के आगे ले जाने के, उन्नत करने के मार्ग बड़े हैं और इसकी प्रशंसाएं सनातन हैं, इसकी रक्षाएं कभी क्षीण नहीं होती।

वह परमपिता सर्वशक्तिमान्, सर्वसमर्थ, अनन्त शक्तिमान् व अनन्त सामर्थ्य वाला है। अनन्त काल से है व अनन्त सामर्थ वाला है, जिसकी कोई सीमा नहीं है, न देश की, न काल की, न समय की। वह सदा सबकी अपने ढंग से रक्षा करता है, दण्ड भी देता है तो हमारी भलाई के लिए ताकि हम भविष्य में कोई बुरा काम न करें।

मनुष्य भी तो उस परमपिता की संतान हैं। पिता में इतनी असीम शक्ति है तो उसके पुत्र में भी अवश्य शक्ति होनी चाहिए। इसलिए परमात्मा ने मनुष्य को भी अपार शक्ति भिन्न-भिन्न रूप में दी है। धन-ऐश्वर्य के रूप में, शारीरिक बल, मानसिक बल, आत्मिक बल के रूप में, लेकिन कुछ लोग अपनी शक्ति का उपयोग नहीं कर पाते। जैसा कि हम कई बार सुनते हैं कि एक व्यक्ति भिखारी का जीवन बिताते हुए मर गया और उसके झोपड़े में से 50-60 लाख रुपये निकले। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने शारीरिक बल को बढ़ा लेते हैं और दुनिया में नाम कमा लेते हैं। कुछ लोग अपना मानसिक व आत्मिक बल इतना बढ़ा लेते हैं और उसे दुनिया की भलाई के लिए, मानवता की उन्नति के लिए, संसार के लोगों के मार्गदर्शन के लिए, संसार में आदर्श स्थापित करने के लिए अपनी शक्ति लगा देते हैं, ऐसे लोग संसार में अमर हो जाते हैं, जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द आदि। ऐसे लोगों ने अपनी शक्ति का उपयोग करके संसार को एक राह दिखा दी।

यह संसार बहुत ही विचित्र है, बड़ी अजीब है यह दुनिया। परमात्मा शक्ति सब में दी है और अपार शक्ति दी है, परन्तु मनुष्य इससे अपरिचित रहता है, क्योंकि हम जानते नहीं कि हमारे मन में क्या है, हमारे मस्तिष्क में क्या है। ऐसा इसलिए होता है, अज्ञान के कारण या प्रमाद के कारण, जीवन को मूर्च्छा की अवस्था में जी रहे हैं अथवा प्राय: सुनते हैं कि समय नहीं है या कुछ लोग ऐसा मानकर जीते हैं कि मैं यह काम नहीं कर सकता जबकि वह उस काम को कर सकते हैं।

जो हमें अपार शक्ति प्रभु द्वारा दी गई है, उसे हम ध्यान योग द्वारा जान सकते हैं। हमें अपनी भीतरी सम्पदा को जानना होगा व उससे काम लेना होगा। केवल आँखें मूंदकर कुछ देर बैठ जाना ही ध्यान नहीं है, यह तो केवल एक अभ्यास का तरीका है, एक प्रशिक्षण जैसा है। ध्यान तो सारा दिन करना होता है, सारे दिन के कार्य को ध्यान से करना होता है तभी ईश्वर प्रदत्त शक्ति का पूर्ण लाभ उठाया जा सकता है। ठीक समय पर ठीक दिशा में काम करके ही शक्ति का लाभ होता है। जीरी के मौसम में जीरी व गेहूँ के मौसम में गेहूँ लगाई जाए और जितना पानी चाहिए उतना पानी दिया जाए तभी तो फसल अच्छी होगी। इसके विपरीत कार्य करने से तो हानि ही हानि होगी।

अपनी शक्तियों का ठीक समय पर ही उपयोग करना होता है अन्यथा तो शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। अपनी पढ़ने-लिखने, शारीरिक बल बढ़ाने, जवानी में धन कमाने, सामाजिक कार्य करने, ध्यान-साधना करना अथवा जो भी कार्य करना है अपनी आयु व समयानुसार करने से शक्ति की वृद्धि होती है और सफलता मिलती है।

एक कथानक है कि किसी राज्य का एक राजा था। उस राज्य में किसी ने गाय नहीं देखी थी। उस राज्य में किसी अन्य राज्य का एक व्यक्ति आया जिसने गाय का वर्णन किया व बताया कि वह दूध देती है जिससे बहुत अच्छे-अच्छे व्यंजन बनते हैं। राजा ने यह सुनकर दूसरे राज्य से एक बहुत ही सुन्दर, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट गाय मँगवाई। अपने व्यक्ति को चांदी का थाल देकर गाय के पास भेजा तो गाय ने मूत्र कर दिया। फिर सोने का थाल देकर भेजा तो गाय ने गोबर कर दिया। राजा ने सोचा कि गाय के बारे में बताने वाला व्यक्ति गलत बता गया। राजा ने अपने सिपाही भेजे जो उस व्यक्ति को पकड़कर ले आये। राजा ने कहा, तुमने हमें गाय के बारे में गलत बताया, इसलिए तुम्हें दण्ड

मिलेगा। उस व्यक्ति ने कहा, हे राजन्, आपके व्यक्तियों को ज्ञान नहीं, मुझे शाम तक का समय दीजिए। उस व्यक्ति ने गाय का दूध निकाला, गर्म किया, मिश्री मिलाई, राजा को दूध पिलाया, फिर खीर बनाई, राजा को खिलाई, दही जमाई, दही खिलाई, मक्खन, लस्सी, घी बनाया। राजा को सब पदार्थ खिलाए। राजा बहुत प्रसन्न हुआ। इसलिए मनुष्य को ज्ञान/बोध होना चाहिए कि कौनसा काम कब करना है, कैसे करना है, तभी उसका लाभ होगा।

हमारे जीवन में स्वर्णिम अवसर प्रभु हमें अवश्य प्रदान करते हैं। जो इसका लाभ उठा लेते हैं, वह सफल हो जाते हैं और जो चूक जाते हैं वह पीछे रह जाते हैं। एक बार एक व्यक्ति आर्थिक तंगी का सामना कर रहा था। वह अपने गुरुजी के पास गया व अपनी स्थिति गुरुजी के समक्ष रखी। गुरुजी ने आर्थिक तंगी से उबरने का साधन बताया। समुद्र के किनारे कंकर का एक ढेर है। उस ढेर में एक कंकर है, जिससे किसी वस्तु को छूकर उसे सोना बनाया जा सकता है। सभी कंकर ठंडे हैं, परन्तु वह विशेष कंकर गर्म है। जाकर उसे ढूंढ लो तो तुम्हारी समस्या का समाधान हो जाएगा। वह व्यक्ति समुद्र के किनारे गया। कंकर उठाता, परखता और फिर समुद्र में फैंक देता। इस प्रकार तीन मास बीत गए। कंकर परखने की गति भी बढ़ गई और कंकर जल्दी-जल्दी समुद्र में फैंकने की आदत भी बन गई। एक दिन एक कंकर समुद्र में फैंका तो तभी एक-दो सैकिंड में आभास हुआ कि यह तो गर्म कंकर था, परन्तु अब क्या हो सकता था। स्वर्णिम अवसर तो आया परन्तु वह चूक गया। हमारा जीवन भी ऐसे ही बीत रहा है, ऐसे ही हमारी जीवनशैली बन गई है। प्रत्येक दिन को हमने हल्के में लेना प्रारम्भ कर दिया है, हमारी आदत ही ऐसे बन गई है, ऐसे ही हमारा जीवन गुजर जाएगा। जबकि हम अपने जीवन को सेवा, सत्संग, स्वाध्याय, यज्ञ, तप, ध्यान, साधना में लगाकर इस मानव जीवन के स्वर्णिम अवसर का लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि प्रभु ने यह सब करने की मानव को अपार शक्ति दी है। हमें रोज अपने जीवन को परखना है। बोध परम सत्य है, जीवन बदल देता है। सही मार्गदर्शन, सही विधियां गुरु से सीखें। विधियाँ तो सदा से हैं परन्तु सीखी तो किसी गुरु से जा सकते हैं। गुरु से सही विधि सीखकर अभ्यास करें। अभ्यास के बिना तो केवल सीख लेने से कुछ भी प्राप्ति नहीं होगी, जैसे एक व्यक्ति के पास एक गाय थी। काफी मात्रा में दूध देती थी। उस व्यक्ति की बेटी की शादी निश्चित हो गई। तब उस व्यक्ति ने सोचा एक मास बाद बेटी का ब्याह है। बाजार से क्या दूध लेना, एक मास गाय का दूध नहीं निकालते। एक मास बाद सारा दूध निकालकर ब्याह का काम चला लेंगे। गाय का दूध देने का अभ्यास छूट गया और गाय का दूध सूख गया। इसी प्रकार यदि हम अपनी शक्तियों को काम में नहीं लाते और अभ्यास छोड़ देते हैं तो शक्तियाँ व्यर्थ चली जाती हैं, हमारे स्रोत धीरे-धीरे सूख जाते हैं। हमारे में जो भी ईश्वर प्रदत्त शक्ति है, उसका हम थोड़ा-थोड़ा अभ्यास अवश्य करते रहें और अपनी शक्तियों को जागृत रखें। प्रायः हम क्या करते हैं, प्रारम्भ से अभ्यास नहीं करते। 60-70 वर्ष की आयु आते-आते हमारे स्रोत शक्ति के सूख जाते हैं। वह मनुष्य सौभाग्यशाली है, जिनको धार्मिक माता-पिता मिलते हैं व अपने बच्चों को संस्कार देते हैं व बच्चे उन संस्कारों को ग्रहण करते हुए बड़े होते हैं तथा जीवन में थोड़ा-थोड़ा अभ्यास जारी रखते हैं, जो उनकी मृत्युपर्यन्त काम आता है।

मनुष्य अपने शरीर से, अपने मन से उन शक्तियों का बोध प्राप्त कर सकता है, जिनका हमें ज्ञान नहीं है। शापनहावर जो एक विदेशी था जब उसने उपनिषदों को पढ़ा व समझा तो वह इतना आनन्दित हुआ कि उपनिषद् को सिर पर रखकर नाचने लगा। दाराशिकोह उपनिषदों को पढ़कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने उन उपनिषदों का फारसी में अनुवाद करवाया। इसी प्रकार हमारे में भी अपार शक्ति है, अपने ग्रन्थों को पढ़-समझकर आनन्द उठाने की।

एक कथानक है कि आदिशक्ति ने देवी-देवता पृथ्वी पर भेज दिए। देवी-देवताओं को पृथ्वी पर खाने-पीने व रहने को कुछ मिला नहीं और वे वापिस आदिशक्ति के पास जाकर कहने लगे, हम पृथ्वी पर कहाँ रहें हमें तो कुछ रहने के लिए मिला ही नहीं। आदिशक्ति ने उन्हें पृथ्वी पर मनुष्य दिखाए और कहा, जाओ आप इनकी काया में रहो। देवी-देवताओं ने मनुष्य की काया में खोजा, तब सूर्य आंख में, अग्नि वाणी में, बृहस्पति रोम-रोम में, चाँद दिल में बस गया। शक्तियाँ तो हमारे अन्दर पड़ी हैं,

शेष पृष्ठ 15 पर....

लेखराम का लहू पुकारे

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

हम में से कितने ही प्रचारक, कार्यकर्त्ता, विद्वान् 39 वर्ष की आयु पार कर चुके होंगे। हम सबके पास 6 मार्च लेखराम के बलिदान दिवस पर यह चिंतन का विषय है कि क्या बलिदान की समय उनकी आयु केवल 39 वर्ष की थी? जी हाँ, 39 वर्ष तक की आयु में ही वह अपने व्याख्यानों से, अपने लेखों से विधर्मियों के कलेजे हिला गया। आर्यों के हृदय में श्रद्धा की एक अमिट छाप छोड़ गया। उस समंय स्वामी श्रद्धानन्द जैसे कद्दावर आर्यनेता भी लेखनी के इस राम के स्नेह से चरण दबाते हैं। ऐसा क्यों? इसका उत्तर हमें पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखी इन पंक्तियों में मिलता है, ''अपनी थोड़ी-सी आयु में उन्होंने जितने व्याख्यान दिये थे और ग्रन्थ या लेख लिखे, उन्हें देखकर आश्चर्य होता है। ऐसा अनुभव होने लगता है कि शायद जीवन का एक क्षण भी उन्होंने अपना नहीं समझा था। सब कुछ महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को अर्पण कर दिया था।'' पाठकगण! यह व्याख्यान बनी बनाई स्टेजों, मंचों पर नहीं थे। कहीं धर्मरक्षा के लिये चलती गाड़ी से कूदकर स्थान पर पहुँचकर, कहीं चौराहों पर, कहीं विधर्मियों के गढ़ पहुँचकर ये व्याख्यान दिये गए। धर्मरक्षा व धर्मप्रचार के लिये ही लेख व पुस्तकें लिखी गईं। गत वर्ष हम पंजाब के कुछ गाँव में प्रचार करके आए। ये गाँव ऐसे थे जहाँ कभी पण्डित लेखराम के साहित्य के प्रभाव से, उनके धर्म भाव से आर्यसमाज पर तन-मन-धन न्यौछावर करने वाले साधु व प्रचारक निकले। आज उन ग्रामों में आर्यसमाज का कोई नामलेवा भी नहीं है। क्या पंजाब के आर्यसमाज के अधिकारियों, सदस्यों, पुरोहितों को लेखराम के लहू की पुकार सुनाई नहीं देती? किसको क्या कहें? लेखराम जैसी लग्न कहाँ से लाएँ? स्वामी श्रद्धानन्द के शब्दों में, ''ज्वर हो, फोड़े निकले हों, चलने के अयोग्य हो, पुत्र की मृत्यु का शोक हो, कोई भी आपत्ति व विपत्ति उनको अपने कर्त्तव्य पालन से नहीं रोक सकती।''

ऋषि जी मण्डन के साथ-साथ खण्डन को धर्म का कार्य मानते थे, ऐसा इस कारण से कि एक तो उन्हें सत्य से बड़ा प्रेम था, दूसरे वे लोकैषणा व अन्य ऐषणाओं से सर्वथा दूर थे। प्रचारक हो या साधु-संन्यासी, सभी के लिए उन्होंने खण्डन को आवश्यक धर्म बताया। उनके प्यारे लेखराम ने यह धर्म बखूबी निभाया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने वर्णन किया है कि धर्मवीर लेखराम ने जो अपनी दिनचर्या बनाई थी, उसमें यह भी लिखा था, ''कटुवचन तथा झूठ से अलग रहना और 'दीन-ए-इस्लाम' की विषयुक्त शिक्षा के बुरे प्रभाव को दूर करने का प्रयत्न और इसी प्रकार दूसरे मतों का भी, और वैदिक धर्म का प्रचार। ईश्वर! मेरी इच्छा को आप पूर्ण कर दो।'' इस्लाम के प्रचारकों पर उनके साहित्य का क्या प्रभाव पड़ा, इसका मौलिक उदाहरण यहाँ देते हैं। मैं इस घटना को किसी विशेष अवसर पर ही सुनाना चाहता था। दो वर्ष पहले की घटना है। आचार्य विरजानन्द दैवकरणि (गुरुकुल झज्जर) ने मुझे स्वामी श्रद्धानन्द लिखित 'दुःखी दिल की दुरदर्द दास्ताँ' पुस्तक की फोटो कॉपी दी थी। मैंने पानीपत में प्रचास करके एक मौलाना उसके अनुवाद के लिए बुलवाए। मेरी शर्त थी कि मौलाना जी हमारे स्थान पर ही प्रतिदिन रहकर अनुवाद करें। वे तैयार न हुए। उस समय उन्होंने मुझसे पूछा था कि 'क्या लेखराम का परा साहित्य मिल सकता है' भले ही वे मौलाना मुझे फिर नहीं मिले, न मैंने ही प्रयास किया लेकिन उनकी यह मांग मुझे आजीवन आर्यपथिक लेखराम के महत्त्व की, उनकी महानता की याद दिलाती रहेगी। धर्मवीरों के मन में लेखराम श्रद्धा व विधर्मियों के मन में डर बनकर युगों तक जीवित रहेंगे। इस मौलिक घटना के वर्णन को मैं अपने साहित्यिक गुरु इतिहास शिरोमणि श्रीयुत राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी के श्रीचरणों में समर्पित करता हूँ।

आर्य हो या पौराणिक धर्मरक्षा के लिए सबकी आशा के केन्द्र आर्यपथिक ही थे। स्वामी श्रद्धानन्द लिखते हैं कि एक बार वे पण्डित लेखराम के साथ दिल्ली से लौट रहे थे कि मार्ग में सनातन धर्म सभा के पण्डित दीनदयालु जी मिल गए। बातचीत आरम्भ होने पर पण्डित लेखराम ने कहा, ''आप हमें कोसने के लिए तो बड़े बहादुर हो लेकिन इस्लाम आपके धर्म की जड़ें खोद रहा है और आप चुप बैठे हो।'' पण्डित दीनदयालु जी ने उत्तर दिया, ''यह काम तो हम सबने आपके सुपुर्द कर छोड़ा है, जब तक आर्यमुसाफिर जीवित है तब तक हमारे धर्म की जड़ें कौन खोद सकता है?'' सत्य के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा के, ऋषि के प्रति उनकी असीम निष्ठा के अनेक उदाहरण हैं, जो आपने पढ़े-सुने होंगे। उनके बलिदान के पश्चात् उनकी पत्नी देवी लक्ष्मी ने जो त्याग किया उसे पढ़कर तो हृदय श्रद्धातिरेक से रो पड़ता है। उनके बलिदान के बाद देवी को जो उनके बीमा का 2000 रुपया मिला, वह पूर्ण राशि उस देवी ने गुरुकुल को दान कर दी। अब इस ऋण को कैसे चुकाया जा सकता है? हमें तो किसी कवि की पंक्ति याद आ रही है—

दिन फेर पिता, वर दे सविता, हम आर्य करें भूमण्डल को।

दुनिया की हालत...

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक
आर्यसमाज गोहाना (सोनीपत)

क्या कहूँ दुनिया की हालत लग गई बीमारी है।
उड़ चली जग से शराफत बढ़ रही मक्कारी है।
क्या कहूँ दुनिया की........ ॥
पनप रही रही है चोरबाजारी धर्म का कोई नाम नहीं है।
दानवता ही दानवता है मानवता का नाम नहीं है।
बेअसर बस हो गये सुर असुरों की सरदारी है।
क्या कहूँ दुनिया की........ ॥
बहुत मिलेंगे छल-बल वाले मुश्किल से कोई नेक मिलेगा।
मन वाणी और कर्म से पूरा लाखों में कोई एक मिलेगा।
करते हैं मन्दिर में पूजा और मिलावट जारी है।
क्या कहूँ दुनिया की........ ॥
ऊपर से हँस-हँसकर मिलते हैं दिल में किसी को प्रीत नहीं है।
मतलब के सब संगी-साथी बिन मतलब कोई मीत नहीं है।
है 'पथिक' मन में कपट और बातों में हितकारी है।
क्या कहूँ दुनिया की........ ॥

(2)

कैसी भारी भूल हुई थी, क्या दिलों ने ठान लिया।
जब इस देश के लोगों ने, पत्थर को ईश्वर मान लिया॥
जड़-पूजा ने ही भारत का, गौरव-मान घटाया है।
वेद का पढ़ना और पढ़ाना, इसने ही छुड़वाया है।
बल-बुद्धि और ज्ञान का जिसने कर दिया आज सफाया है।
खाना-पीना मौज उड़ाना, जीवन का फल जान लिया।
जब इस देश के लोगों ने.... ॥
क्योंकर आकर मोहमूद गजनवी मन्दिर तोड़ गिरा देता।
लूट के लाखों हीरे-मोती देश अपने पहुँचा देता।
कृष्ण-सा होता वीर कोई तो पुरजे उसके उड़ा देता।
मूर्तियों में ध्यान लगाकर खुद ही कर नुकसान लिया।
जब इस देश के लोगों ने.... ॥
जब से चली यह मूर्तिपूजा दम्भ ने डाला डेरा है।
घर-घर में पाखण्ड अविद्या छाया घोर अन्धेरा है।
पापों की काली रातों ने जीवन का दिन घेरा है।
पूंजी सुख की छोड़ के दुःख का ढूंढ़ 'पथिक' सामान लिया।
जब इस देश के लोगों ने.... ॥

शिवरात्रि पर ऋषि को....पृष्ठ 8 का शेष...

दयानन्द ने अपनी मान्यताओं के समर्थन में विपक्षी विद्वानों से शास्त्रार्थ, वार्तालाप व शंका समाधान आदि भी किये। उनके अनुयायी विद्वानों ने उनके खोजपूर्ण अनेक विस्तृत जीवन चरित्र लिखे।

यह सब ऋषि दयानन्द को संसार का महानतम पुरुष सिद्ध करते हैं जो दृढ़ ईश्वर विश्वासी हैं, अद्भुद ज्ञानी हैं, तपस्वी व पुरुषार्थी हैं, तर्क शक्ति से सम्पन्न हैं, किसी भी विवादित विषय पर चर्चा करने पर अपराजेय हैं, एक साधारण नाई की सूखी रोटी स्वीकार कर उसे भी प्रेम से खाते हैं तथा विश्वबन्धुत्व का प्रचार करने सहित सभी मनुष्यों को परमात्मा की सन्तान बताते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने उपदेशों व ग्रन्थों के द्वारा जिस सत्य सनातन तर्क-सिद्ध व सर्वहितकारी वैदिक धर्म का प्रचार किया वहीं धर्म एवं संस्कृति विश्व के प्रत्येक मनुष्य का वस्तुतः सत्य व यथार्थ धर्म व संस्कृति है। संसार को इसको अपनाना ही होगा। अन्य कोई सत्य धर्म व जीवन शैली वैदिक जीवन के समान हो ही नहीं सकती। ऋषि दयनन्द ने शुद्ध हृदय एवं भावनाओं से संसार से अविद्या दूर करने के लिये सत्य सनातन सिद्धान्तों पर आधारित जिस वैदिक मत का प्रचार किया उसमें वह सफल हुए हैं। वैचारिक धरातल पर ऋषि दयानन्द के अधिकांश विचारों को पूरे विश्व में स्वीकृति मिल चुकी है। कोई इनको चुनौती नहीं देता। शेष को भी कुछ समय बाद स्वीकृति अवश्यमेव मिलेगी। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

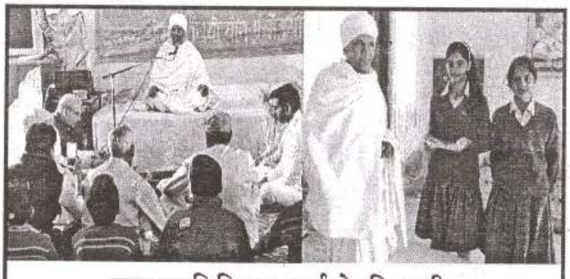

मुख्य अतिथि आचार्य वेदमित्र जी,
ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव पर डी.ए.वी. विद्यालय, बेरी।

भूल-सुधार

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका के **फरवरी 2020 प्रथम** में **वर्ष-15, अंक-23** भूलवश छप गया है, जबकि **वर्ष-16, अंक-1, फरवरी 2020 प्रथम अंक** छपना चाहिए था। इस असुविधा के लिए हमें खेद है। —**सम्पादक**

कोरोना—विनाशकारी जैव.... पृष्ठ 9 का शेष...

बैक्टीरिया वायरस से या सामाजिक हथियारों से एक-दूसरे पर आक्रमण करना मानवता के लिए अत्यन्त अधिक घातक है। प्रकृति में वातावरण को शुद्ध बनाने व साम्य रखने के लिए परमात्मा की अपनी विशेष व्यवस्था है। कार्बन-डाई-ऑक्साइड से पौधे अपना भोजन निर्माण करते हैं जिसमें पृथ्वी से तत्त्व व जल एवं सूर्य का प्रकाश भी लिया जाता है। पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं उसे जीव जगत् अपने हेतु प्रयोग में श्वास क्रिया द्वारा करता है। जीव कार्बन-डाई-ऑक्साइड छोड़ते हैं और उधर वातावरण में दूषित वायु मनुष्य के लिए हानि गैसों का जलवायु द्वारा शुद्धिकरण होता रहता है। बरसात से वातावरण की दूषित गैसें पृथ्वी में मिल जाती हैं। प्रदूषित जल नालों, नदियों से समुद्र में जाता और समुद्र से बादल बन पृथ्वी पर बरसात होती है। यूंही यह चक्र चलता है। ईश्वर सबका भला चाहता है, किसी का बुरा नहीं चाहता। वह ईश्वर के कार्य में भी हस्तक्षेप करना चाहता है। परमाणु बम कितना हानिकारक और विनाशकारी है, परन्तु उस रेडियोएक्टिव तत्त्व का वैज्ञानिक रूप में प्रयोग करते हैं, तो परमाणु ऊर्जा से विद्युत् प्राप्त कर जनता हेतु लाभकारी रूप में बदल देते हैं। जिनेटिक वायोलोजी में क्लोन बनाने की प्रक्रिया भी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ है। हाँ, उसका मनुष्य के अंग-प्रत्यंग निर्माण में प्रयोग हो तो वह उचित हो सकता है, फिर भी हमें ऐसी वैज्ञानिक खोजों से सावधान रहना होगा। खोज व अन्वेषण मानव के लिए लाभकारी होनी चाहिए विनाशकारी न हों। जब मानव ही न रहेगा तो सुख-सुविधा जो ईश्वर ने दी है, उनका उपयोग कौन करेगा? मनुष्य कहते हैं एक बुद्धिजीवी प्राणी है। मेरे विचार से तभी बुद्धिजीवी हैं जब तक संसार पर उपकार का कार्य करे और परोपकार का ही विचार करे। ईश्वरीय मार्ग पर चले सत्याचरण करने वाला हो और यदि ईश्वर की दी बुद्धि का दुरुपयोग करता है अर्थात् भलाई का कार्य न कर बुरा या अनर्थ करे तो यह बुद्धिमत्ता नहीं होगी। आज जो यह विनाशकारी कार्य हो रहे हैं, जीव-जगत् के लिए घातक हैं। जो यह कार्य कर रहे हैं, ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करे।

वैदिक संस्कृति-आर्यावर्त से.... पृष्ठ 10 का शेष...

लिए भूमि को उपजाऊ बनाना आरम्भ कर दिया। पुर्तगालियों के बाद अंग्रेजों ने व्यापारियों के रूप में आर्यावर्त में प्रवेश किया और धीरे-धीरे भारत की सामाज़िक, धार्मिक और आर्थिक सम्पदा के डकैत बन गए।

आर्यावर्त से बने हिन्दुस्तान को नया नामकरण दिया गया इंडिया। पश्चिम की संस्कृति को इस्लाम से आहत वैदिक संस्कृति के स्थान पर स्थापित करने का अभियान पुनः चलाया गया। बेचारी वैदिक संस्कृति रावण से लेकर माऊंटबैटन तक लड़ती रही गिरती रही, उठती रही। असंख्य जख्मों से घायल वैदिक सम्पत्ति, वैदिक संस्कृति, अपने आर्यपुत्रों की ओर देख रही है मानो कह रही हो, मैं तो इतने जख्म खाकर भी जिंदा हूँ किन्तु निराश्रय होकर आखिर कब तक जीवित रहूँगी।

अपार शक्ति...... पृष्ठ 12 का शेष...

बस उन्हें चिन्तन का पानी चाहिए होता है, जिससे ये शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। गुरु ने अपने शिष्य को सिखा दिया बस उसका अभ्यास करना है। गुरु ने तो बीज डालना है और शिष्य ने अभ्यास, चिन्तन, मनन के द्वारा पेड़ बनाना है फिर देखो कैसे सुन्दर उस पर फल-फूल लगते हैं और वह फल-फूल हैं सुख, शान्ति, आनन्द, मान, प्रतिष्ठा आदि।

उस परमपिता परमेश्वर के सान्निध्य में अधिक से अधिक समय बैठकर देखें। प्रभु का दृश्य जगत् देखकर, चलते-फिरते प्रभु का चिन्तन बना रहे। चिन्ता हर समय हो सकती है, तो चिन्तन क्यों नहीं। बस एक मानसिकता बनाने की आवश्यकता है। हर प्राणी, जड़-चेतन में प्रभु दृश्यमान होने लगेगा।

हम अपने जीवन में कुछ बदलाव लाने का प्रयास करें, अपने विकारों को जानें व उन्हें दूर करने का अभ्यास व प्रयास करें। प्रत्येक दिन प्रभु की दात समझें। मनुष्य जीवन ही स्वर्णिम अवसर है प्रभु मिलन के लिए, तभी तो उसने हमें शारीरिक, वैचारिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक शक्ति दी है और इन्हीं के द्वारा जैसा कि मंत्र में कहा है आगे ले जाता है, उन्नत करता है व रक्षा करता है।

ओ३म् शान्तिः।

स्वामी शक्तिवेश जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ-सत्संग

झज्जर 10.02.2020। स्वामी शक्तिवेश जी बलिदान दिवस का दो दिवसीय कार्यक्रम का गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। पं. जयभगवान आर्य के संयोजन में रामभगत खुडन, योगाचार्य रमेश कोयलपुर, तारिक शर्मा, पहलवान प्रेमदेव, देवीसिंह आर्य, कुमारी प्राची आर्या, प्रदीप शास्त्री, संजय यादव, जिलेसिंह, पं. रामकरण, आचार्य बालेश्वर, प्रा. द्वारकादास, आचार्य योगेन्द्र, डॉ. श्रीनिवास पूर्व कॉलेज प्राचार्य, डॉ. एच.एस. यादव पूर्व प्राचार्य, चन्द्रपाल माजरा, आचार्य वीर सैन, दलीप आर्य, महावीर सिंह, विजय आर्य, भजनोपदेशक धनीराम बेधड़क, जे.के., नवीन आर्य, ओमप्रकाश यादव, भूराजप्रिय आदि गणमान्य महानुभावों ने प्रेरणादायक बातें रखीं। कुनाल आर्य यज्ञमान तथा ब्र. सुभाष आर्य यज्ञ ब्रह्मा रहे। श्रीमती सरोज आर्या एवं श्री रमेश योगाचार्य की योगा टीम ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी तथा योग संबंधित ज्ञान का परिचय दिया। महाशय रामभगत खुडन, प्रेमदेव, लीलाराम, उमेद, धर्मपाल, रामकंवार, ईश्वर, जयवीर आदि महानुभावों ने स्वामी शक्तिवेश जी का संन्यास से पूर्व कृष्णदत्त शर्मा के रूप में गांव माछरौली की सरकारी स्कूल में आदर्श अध्यापक की भूमिका को कृतज्ञता से याद किया और कहा कि उन्होंने हमें अच्छे संस्कार दिये। कुमारी प्राची योगाचार्या ने कहा कि अविद्या के कारण व्यक्ति गलत कार्य करता है। जो वस्तु जैसी है उससे विपरीत समझना अविद्या है। प्रदीप शास्त्री, आचार्य बालेश्वर, प्राध्यापक द्वाराकादास ने बच्चों को सुसंस्कारित करने पर जोर दिया। डॉ. श्रीनिवास प्राचार्य तथा डॉ. एच.एस. यादव प्राचार्य ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र, योगीराज कृष्णचन्द्र, महर्षि दयानन्द जैसे आप्तपुरुषों का हमें अनुसरण करना चाहिए। ब्र. सत्यकाम जी एवं श्री ओमप्रकाश रोहतक ने समाज में बढ़ती हुई अनैतिकता दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि समय रहते इन बुराइयों पर हमने रोक नहीं लगाई तो इसके भंयकर दुश्परिणाम होंगे। आचार्य योगेन्द्र एवं योगाचार्य सत्यपाल वत्स ने शारीरिक उन्नति के लिए विभिन्न यौगिक क्रियाओं का सिखाते हुए हमेशा खुश रहने पर जोर दिया। ब्र. सुभाष आर्य ने स्वाहा को यज्ञ का सार तथा इदन्न मम को यज्ञ की आत्मा बताते हुए नि:स्वार्थ भावना से परोपकार करने की बात कही। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बताया स्वामी शक्तिवेश जी ने राष्ट्रीय सन्त के रूप में अपनी भूमिका निभाई। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल धासेड़ा, वैदिक आश्रम रेवाड़ी आदि संस्थाओं का सफल संचालन किया। उनके महान कार्यों से हमें आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने की प्रेरणा मिलती है। डॉ. रणबीर मल्हान, मा. पनसिंह, मामन सैनी, सज्जन, राजेन्द्र यादव, आत्माराम, रमेश मल्हान, श्रीराम यादव, हरिकिशन, रामेश्वर, सेठ गोपाल गोयल, भगत यादव, पं. वेदप्रिय, ब्र. अनन्त मेहता, ब्र. संजय आर्य, सूर्यप्रकाश, ब्र. कृष्ण यादव, सुरेश देवी आदि गणमान्य महिला-पुरुष उपस्थित रहें। ऋषिलंगर की उत्तम व्यवस्था थी।

–सुभाष आर्य, मो. 9813356991

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी की ओर से वैदिक पुरोहित शिविर एक सप्ताह के लिए लगाया गया जिसमें आचार्य सत्यव्रत रोहतक ने लगभग चालीस पुरोहितों को वैदिक रीति से यज्ञ व सोलह संस्कार करवाने का प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी के अध्यक्ष महात्मा यशदेव जी, स्वामी जीवानन्द नैष्ठिक एवं आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के समस्त पदाधिकारी व सदस्यों सहित जिले की आर्यसमाजों के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। शिविर समापन पर सभी शिविरार्थियों को आर्यसमाज की ओर से प्रमाण-पत्र भी दिया गया।

शोक-समाचार

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के कर्मठ कार्यकर्त्ता भाई अशोक आर्य जी की माता श्रीमती बालीदेवी व भतीजे श्री वेदपाल का स्वर्गवास हो गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं व्यथित परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—कमलसिंह आर्य, अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

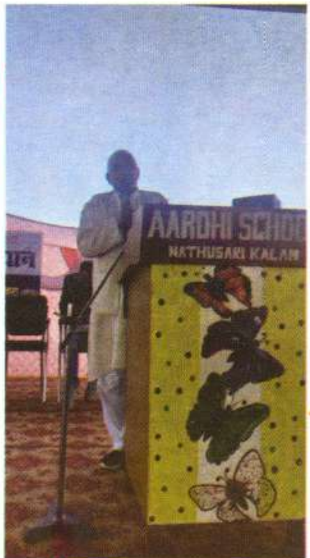

नाथूश्री कलां में
आयोजित
नशा मुक्ति अभियान
कार्यक्रम
में सभा प्रधान
मा० रामपाल आर्य जी।

वेद प्रचार अभियान की झलकियां

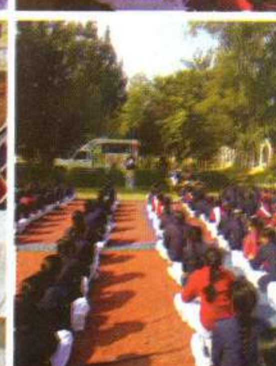

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति नियुक्त होने पर श्री राजबीर सिंह को बधाई देते हुए सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य जी साथ में हैं श्री सत्यवान आर्य।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा